सहयोगियों का विस्तार

समय :

न्यूनतम 30 मिनट

लक्ष्य अथवा उद्देश्य :

- सहयोगियों और प्रतिपक्षियों की पहचान करना
- उन कार्यनीतियों का नियोजन सीखना जिसके द्वारा उचित सहयोगियों को जोड़ा जा सके साथ ही लोगों को सक्रीय सहयोगी बनाया जा सके
- सकारात्मक जुड़ाव के लिये विश्वास के साथ उत्साहवर्धन करना ताकि यह अहसास दिलाया जा सके कि प्रतिपक्षियों पर जीत महत्वपूर्ण नहीं है
- रणनीतियों की हृदयग्राही जटिलता में लोगों को आमंत्रित करना

यह कैसे किया जा सकता है / सहयोग के लिये प्रमुख तत्व

सबसे महत्वपूर्ण समाज (शहर या राज्य) में सहयोगियों के उस विविधता वाले वर्णक्रम को विस्तार से समझना आवश्यक है जो प्रस्तावित परिवर्तन के पक्ष अथवा प्रतिपक्ष में हैं। इसे समझाने के लिये एक सीधी रेखा खींचिये। इस क्षैतिज रेखा के बायीं ओर उन प्रमुख सहयोगियों को चिन्हित कीजिये जो परिवर्तन के पक्ष में हैं। इसके ठीक दूसरी ओर अर्थात दाहिने छोर पर उन प्रतिपक्षियों को चिन्हित कीजिये जो परिवर्तन के विरोध में हैं।

इन दोनों सिरों को एक अर्धवृत्त से जोड़ते हुये बायें से दायें सहयोगियों और प्रतिपक्षियों का वर्णक्रम निर्धारित कीजिये। अर्धवृत्त के मध्य में उन लोगों को रखिये जो निष्पक्ष हैं।

अब समूह से उस विषय पर चर्चा प्रारंभ कीजिये जिस से वे सबसे अधिक परिचित हैं। आप उन ऐतिहासिक घटनाओं की चर्चा से शुरुआत कर सकते हैं जिस से सब लोग वाकिफ़ हैं। इसके पश्चात् उस हमारी प्रमुख मांग पर चर्चा करते हुये समूह को पूछिये कि इसके लिये कौन सहयोगी, निष्पक्ष और प्रतिद्वंदी हैं। जैसे जैसे समूह पक्षकारों और प्रतिपक्षियों को चिन्हांकित करता जाता है - उसे अर्धवृत्ताकार वर्णक्रम में लिखते जाइये। इस अभ्यास को जितना हो सके रोचक बनाते हुये समूह की भागीदारी से वर्णक्रम को भरिये। अभ्यास में हमारा लक्ष्य साफ़ होना चाहिये।

समूह से यह जानने की कोशिश कीजिये कि आख़िर कुछ लोग निष्पक्ष क्यों हैं। क्या उनसे संवाद करते हुये सहयोगी बनाया जा सकता है। समूह में चर्चा कीजिये कि कैसे समाज का कोई वर्ग - संवाद और

समय के साथ अपना पक्ष बदलता है। जैसे सैनिक और पूर्व सैनिक अक्सर युद्ध का समर्थन करते हैं किन्तु समय के साथ उनका पक्ष बदल भी सकता है।

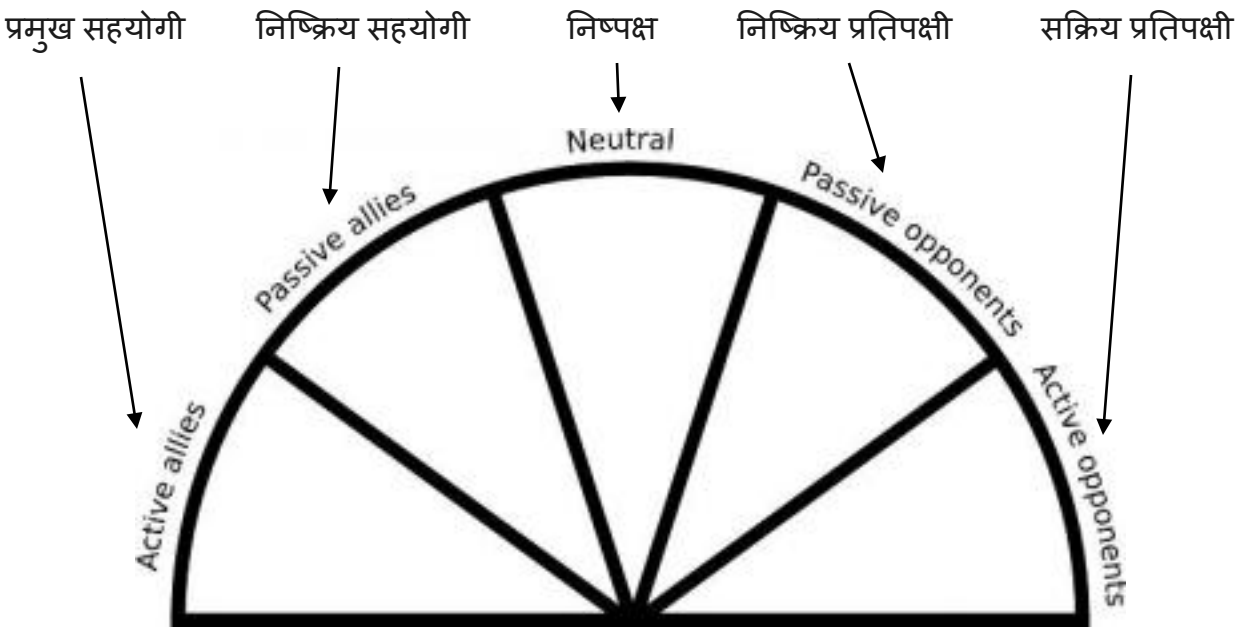

प्रोत्साहित कीजिये :

सामाजिक परिवर्तनों के अधिकांश अभियानों में हमारे मतों से प्रतिपक्षियों को हमेशा बदला जा सके यह संभव नहीं होता है। लेकिन प्रतिपक्षियों के वर्ग से कुछ लोगों को समय और संवाद के साथ संभावित सहयोगी अवश्य बनाया जा सकता है।

समूह को इस तरह उत्साहित कीजिये कि वह सहयोगियों के वर्णक्रम को रणनीतिक रूप से समझ सके। समूह द्वारा निर्धारित रणनीतियां ऐसी होनी चाहिये कि संभावित सहयोगियों का दायरा बढ़ता रहे। किन वर्गों को संभावित सहयोगी बनाया जा सकता है यह समझने और समझाने के लिये उनसे पूछिये कि - किस वर्ग तक हम आसानी से पहुँच सकते हैं और उन्हें विश्वासपात्र मानते हैं ? किस वर्ग से अबतक संबंध स्थापित नहीं हुआ है ? किस वर्ग को हम अपने पक्ष में राज़ी कर सकते हैं ?